Changing Ways

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं. HP/DMA/113

बदलती राहें

(साप्ताहिक)

❑ वर्ष 01 ❑ अंक 15 ❑ पृष्ठ : 04 ❑ मूल्य : 4 रुपये | धर्मशाला, 18 अप्रैल 2016 | हर सोमवार को प्रकाशित

विवादों में घिरा धर्मशाला नगर निगम का लोगो

चीड़ से धर्मशाला की पहचान जोड़ना उचित नहीं मान रहे बुद्धिजीवी

- धौलाधार की खूबसूरती व देवदार की भव्यता भी नजरअंदाज
- कांगड़ा चाय के बागान और शहीद स्मारक भी है पहचान
- अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैदान भी दिला रहा है विश्व में पहचान

धर्मशाला। हाल ही में अस्तित्व में आए नगर निगम धर्मशाला की पहचान के लिए लांच किया गया लोगो (प्रतीक चिन्ह) लांचिंग के साथ ही विवादों में घिर गया। विवाद इस लोगो में इस्तेमाल किए गए चीड़ के फल और पत्तीयों को लेकर है। अगर जानकारों व बुद्धिजीवियों की मानें तो चीड़ के पेड़ अंग्रेजों के साम्राज्य के प्रतीक ही माने जाते हैं। वैसे भी चीड़ के पेड़ सिर्फ धर्मशाला की ही पहचान कैसे हो सकते हैं, जबकि ये पेड़ पूरे हिमाचल प्रदेश में दिखते हैं। ऐसे में पर्यटन की पहचान बन चुके प्रदेश के एक शहर को सिर्फ एक ऐसे पेड़ से जोड़ना, जिसका स्थानीय लोगों के जीवन से न तो कोई जुड़ाव है और न ही इससे इस शहर की पहचान की जा सकती है।

धर्मशाला शहर को धौलाधार की बर्फ से ढकी चोटियां खूबसूरती प्रदान करती हैं। इनकी जगह चीड़ के पेड़ कतई नहीं ले सकते। यहां की पहचान तिब्बती धर्मगुरु दलाईलामा से भी जुड़ी हुई है। अलबत्ता धर्मशाला में मौजूद चाय के बागान, जो विश्व भर में कांगड़ा चाय की पहचान दिलाते हैं भी यहां की अलग पहचान से जुड़े हुए हैं। इसी तरह धर्मशाला खेल नगरी के तौर पर भी विश्व विख्यात हो चुका है। भले ही यहां का अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैदान राजनीतिक तौर पर दो पार्टियों में सियासी जंग का प्रतीक भी बना हुआ है, जो दुर्भाग्यपूर्ण है मगर इसे धर्मशाला की पहचान से अलग नहीं किया जा सकता। सबसे बड़ी बात यहां का शहीद स्मारक भी है। सियासत के लिए शहीदों को ढाल बनाने वाले शायद धर्मशाला की पहचान से इस स्मारक को जोड़ना याद नहीं रख पाएं, मगर धर्मशाला ही नहीं पूरे प्रदेश के लिए इसका खासा महत्व है। कुल मिलाकर महज एक ऐसे वृक्ष से धर्मशाला की पहचान करना, जो न तो लोगों की आर्थिकी से जुड़ा है और न ही परंपरा का हिस्सा रहा है। अगर वृक्ष की ही बात करें तो इससे कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण देवदार का वृक्ष है, जो यहां आने वाले पर्यटकों को सुकून व ताजगी का अहसास करवाता है।

लोगो के लिए नहीं मांगी गई प्रविष्टियां

धर्मशाला नगर निगम से ज्यादा विवाद का प्रतीक बनते नजर आ रहे यहां के लोगो को डिजाइन करने के लिए नगर निगम ने सार्वजनिक प्रविष्टियां तक नहीं मांगीं। इसके बजाय खुद ही अधिकारियों व सदस्यों ने मिल बैठ कर इसे तैयार करवाया और फिर जनता के समक्ष पेश कर दिया। जबकि सार्वजनिक प्रतीकों के लिए अक्सर जनता से प्रविष्टियां आमंत्रित की जाती हैं। इसके बाद विशेषज्ञ इसका चयन करते हैं और जो लोगो सबसे अलग होता है उसे स्वीकार किया जाता है।

क्या कहते हैं शहरी विकास मंत्री

शहरी विकास मंत्री सुधीर शर्मा ने इस लोगो की लांचिंग के अवसर पर कहा कि कांगड़ा घाटी में चीड़ के पेड़ बहुतायत में हैं और लोगो' के रूप में चीड़ के फल एवं पत्तियों का चुनाव हमें अपनी पृष्ठभूमि से भी जोड़ता है। उन्होंने कहा कि चीड़ का फल अपने आप में प्रत्येक परिस्थिति में समरूप बने रहने, जुझारूपन और नित्यता को प्रतिबिंबित करता है। साथ ही, यह फल जिस प्रकार पत्तियों को धारण किए रहता है, वह सबको साथ लेकर चलने के संदेश का परिचायक है।

संक्षेप

15 मई तक बंद रहेगा दाड़ी बाईपास

धर्मशाला। धर्मशाला के दाड़ी बाई पास रोड पर सोली खड्ड से मांझी खड्ड पुल वाया गोरख नाथ मंदिर (दाड़ी बाई पास रोड) संपर्क सड़क 18 अप्रैल से 15 मई तक की अवधि के दौरान वाहनों की आवाजाही के लिए बंद रहेगी। इस अवधि में इस सड़क पर कंकरीट का कार्य किया जाना प्रस्तावित है। लोक निर्माण विभाग, धर्मशाला के उपमंडल-द्वितीय के सहायक अभियंता एसके डडवाल ने जन सहयोग की अपील करते हुए इस अवधि के दौरान लोगों से वैकल्पिक सड़क या मार्ग का उपयोग करने का आग्रह किया है।

32 आयुर्वेद अस्पतालों में होम्योपैथी चिकित्सा

शिमला। हिमाचल प्रदेश सरकार राज्य में आयुर्वेद के साथ-साथ होम्योपैथी को भी बढ़ावा दे रही है। प्रदेश सरकार ने सभी 32 आयुर्वेदिक अस्पतालों में होम्योपैथिक चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाने का निर्णय लिया है। यह जानकारी आयुर्वेद मंत्री कर्ण सिंह ने विश्व होम्योपैथिक दिवस के अवसर पर नई दिल्ली में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में दी। संगोष्ठी का शुभारंभ केंद्रीय आयुष राज्य मंत्री श्रीपद यसो नायक ने किया। इस दौरान नेपाल व बांगलादेश के स्वास्थ्य मंत्री सहित देश के 8 राज्यों के स्वास्थ्य मंत्री उपस्थित थे।

■ शेष पृष्ठ 2 पर

सेना में भर्ती 31 मई से

शिमला। सेना भर्ती कार्यालय शिमला द्वारा शिमला, सोलन, सिरमौर और किन्नौर जिलों के युवाओं के लिए 31 मई से 5 जून, 2016 तक सेना में भर्ती का आयोजन किया जा रहा है। यह भर्ती शिमला जिला के रामपुर में होगी। यह जानकारी निदेशक भर्ती कर्नल योगेश जोशी ने दी। कर्नल जोशी ने बताया कि भर्ती सामान्य डियूटी (जीडी), सैनिक लिपिक, सैनिक ट्रेडमेन, सैनिक तकनीकी, नर्सिंग सहायक व नर्सिंग सहायक (वैटनरी) और डीएससी (भूतपूर्व सैनिक) पदों के लिए होगी।

■ शेष पृष्ठ 2 पर

हिमाचल हाईकोर्ट को मिले चार जज

शिमला। हिमाचल प्रदेश हाईकोर्ट के चार नए जजों ने आज पद और गोपनियता की शपथ ली। हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस मंसूर अहमद मीर ने इन नए जजों विवेक ठाकुर, सीधी वारोवालिया, अजय मोहन गोयल और संदीप शर्मा को शपथ दिलाई। संदीप शर्मा व वारोवालिया को अतिरिक्त न्यायाधीश नियुक्त किया गया है। हाईकोर्ट की कुल तेरह बेंच में से कार्य कर रहे बेंच की संख्या सात से बढ़कर 11 हो गई है। इस अवसर पर हाईकोर्ट के अन्य न्यायाधीश, बार

काउंसिल के पदाधिकारी, महाधिवक्ता, अधिवक्ता, अतिरिक्त महाधिवक्ता, उप महाधिवक्ता उपस्थित रहे। ज्ञात रहे कि

■ शेष पृष्ठ 2 पर

हिमाचल दिवस समारोह में मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह का ऐलान

दो साल में 25 हजार नौकरियां देगी सरकार

घुमारवीं। मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह ने कहा कि प्रदेश सरकार ने पिछले तीन वर्षों में सरकारी व निजी क्षेत्र में 60 हजार लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाया है। इसमें 27 हजार से अधिक रोजगार अकेले सरकारी क्षेत्र में ही शामिल है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार आगामी दो वर्षों के दौरान सरकारी क्षेत्र में 25 हजार लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाने के लिए वचनबद्ध है। मुख्यमंत्री आज बिलासपुर जिला के घुमारवीं में 69वें हिमाचल दिवस पर आयोजित राज्य स्तरीय समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने इस अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया तथा सेना, गृह रक्षकों, एनसीसी और विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत मार्च पास्ट की सलामी ली।

इस अवसर पर वीरभद्र सिंह ने कहा कि वर्तमान प्रदेश सरकार ने सत्ता संभालने के बाद युवाओं को सरकारी तथा गैर सरकारी क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध करवाने के लिए कौशल को बढ़ावा देने पर बल दिया है। उच्च शिक्षा क्षेत्र में 3237 नियुक्तियों के अतिरिक्त 4527 पदोन्नतियां जबकि प्रारंभिक शिक्षा विभाग में 5000 से अधिक नियुक्तियां की गई हैं। उन्होंने कहा कि 3355 पद नए सृजित व स्तरोन्नत शिक्षण संस्थानों के लिए सृजित किए गए और नए स्वीकृत मेडिकल कालेजों के लिए 1775 पद सृजित किए गए। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य क्षेत्र में विभिन्न श्रेणियों, विशेषज्ञ डाक्टर भी शामिल हैं, के 2458 पद भरने के अतिरिक्त 7503 आशा वर्करों की नियुक्तियां की गई। उन्होंने कहा कि पुलिस विभाग में 1300 से अधिक नियुक्तियां की गई।

उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार मुख्यमंत्री आवास योजना के अंतर्गत सामान्य श्रेणी के बीपीएल परिवारों को गृह निर्माण के लिए 75 हजार रुपये का अनुदान प्रदान कर रही है।

■ शेष पृष्ठ 2 पर

गरीब पर मार, अमीर की मौज

आरबीआई की खिंचाई करते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि बैंकिंग रेगुलेटर होते हुए भी वह (आरबीआई) वाचडॉग की तरह काम नहीं कर रहा है। वस्तु स्थिति भी यही है। देश में अमीर आराम से करोड़ों का कर्ज लेकर कानून के शिकंजे से बच निकलते हैं मगर गरीब चंद रुपए नहीं लौटाने पर भी हर तरह से प्रताड़ित किया जाता है। हताश, बेबस कर्ज में डूबे किसान और गरीबों को खुदकुशी करने पर विवश होना पड़ता है।

किंगफिशर एयरलाइंस का दिवाला निकलने से भारी कर्ज में डूबे शराब कारोबारी विजय माल्या के मामले ने पूरे देश का

ध्यान बैंकों का कर्ज नहीं चुकाने वाले रसूखदार डिफाल्टर्स की ओर आकृष्ट किया है। विजय माल्या को चौदह बैंकों का लगभग नौ हजार करोड़ रुपया देना है। इस समय वे विदेश में मौज-मस्ती कर रहे हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने इस मामले में बैंकों के हैडमास्टर भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) पर तल्ख टिप्पणी करते हुए कहा है कि यह कैसी व्यवस्था है कि कुछ हजार रुपए कर्ज लेने वाले किसानों से वसूली के लिए हर तरह के उपाय किए जाते हैं, किसानों की जमीन तक बेच दी जाती है, मगर हजारों करोड़ रुपये डकारने वाली कंपनी को बीमार बताकर मौज करने के लिए छोड़ दिया जाता है।

आरबीआई की खिंचाई करते हुए न्यायालय ने कहा कि बैंकिंग रेगुलेटर होते हुए भी वह (आरबीआई) वाचडॉग की तरह काम नहीं कर रहा है। वस्तु स्थिति भी यही है। देश में अमीर आराम से करोड़ों का कर्ज लेकर कानून के शिकंजे से बच निकलते हैं मगर गरीब चंद रुपए नहीं लौटाने पर भी हर तरह से प्रताड़ित किया जाता है। हताश, बेबस कर्ज में डूबे किसान और गरीबों को खुदकुशी करने पर विवश होना पड़ता है। पिछले महीने तमिलनाडु के एक किसान द्वारा कर्ज नहीं लौटाने पर एजेंटों ने पुलिस की मौजूदगी में उसका ट्रैक्टर जब्त कर लिया, जबकि वह सात लाख के कर्ज का पांच लाख से ज्यादा लौटा चुका था। बाद में इस किसान ने खुदकुशी कर ली। पूरे देश में किसानों और कमजोर तबकों द्वारा कर्ज समय पर नहीं चुकाने की स्थिति में उनकी संपत्ति कुर्क कर ली जाती है, मगर अमीरों के मामले में ऐसा नहीं किया जाता।

अमीर लोग कितने रसूखदार होते हैं और कानून को किस तरह अपनी जेब में लेकर घूमते है, देश के अग्रणी बैंक स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) की चेयरमैन ने खुद इस बात का

खुलासा किया है। बैंक को उसके पास गिरवी रखे गए माल्या के गोवा स्थित किंगफिशर हाउस का कब्जा लेने के लिए तरह-तरह के पापड़ बेलने पड़े। उच्च न्यायालय ने उत्तरी गोवा के डीसी को तीन माह के भीतर इस बिल्डिंग का कब्जा एसबीआई के सुपुर्द करने के आदेश दिए थे, मगर डीसी बार-बार सुनवाई करके मामले को टालता रहा और फिर छुट्टी पर चले गया। माल्या की किंगफिशर कंपनी कबकी बंद हो चुकी है। उन्होंने अपनी शराब बनाने की कंपनी भी बेच दी है और वे पैसा लेकर विदेश चले गए हैं। प्रवर्तन निदेशालय ने माल्या पर मनी लॉन्ड्रिंग का मामला दर्ज कर रखा है, मगर विभाग उन्हें रोक नहीं पाया। माल्या को पूछताछ के लिए तलब किया जा रहा है। माल्या तीन बार नहीं आए मगर प्रवर्तन निदेशालय इस पर भी कुछ नहीं कर सका। अब कहीं

जाकर प्रवर्तन निदेशालय ने सरकार से माल्या के पासपोर्ट को जब्त करने की सिफारिश की है। माल्या ही क्यों ऐसी और भी कई मिसालें हैं।

ताजा आंकड़ों के अनुसार सरकारी बैंकों की नॉन-परफॉर्मिंग असेटस लगातार बढ़ती जा रही है। हाल ही में जारी रिपोर्ट के अनुसार सरकारी बैंकों (पीएसयू) के बैड लोन और एनपीए आठ लाख करोड़ को भी पार कर चुके हैं जो कि बैंकों की मार्केट वैल्यूएशन से पांच गुना ज्यादा है। सरकारी बैंकों की हालत इस कद खराब है कि उनके हर 100 रुपए के शेयर पर निवेशकों को 150 रुपए के बैड लोन्स का बोझ उठाना पड़ रहा है। सरकारी बैंकों की तुलना में प्राइवेट बैंकों की एनपीए काफी कम है। स्पष्ट है कि भ्रष्टाचार और राजनीतिक दखलादांजी ने सरकारी बैंकों को दिवालियापन की कगार पर ला खड़ा कर दिया है। आरबीआई ने बैंकों को वर्ष 2017 तक तमाम बैड लोन्स एवं एनपीए से मुक्त करने को कहा है। बैंक ऐसा कर पाएंगे, इस पर संदेह है। लगभग चार लाख करोड़ रुपए के बैड लोन्स इतने कम समय में रिकवर करना नामुमकिन है।

बहरहाल, सरकारी बैंक भले ही आरबीआई को नजरअंदाज कर लें, मगर देश की सर्वोच्च अदालत के आदेश को बेअदबी नहीं कर पाएंगे। सर्वोच्च न्यायालय ने बैंकों को डिफाल्टर्स के नाम सार्वजनिक करने और उनकी कलई खोलकर उनका सच जनता के सामने लाने को कहा है। यही एक तरीका है जिससे अमीरों पर दबाव पड़ सकता है। माल्या का मामला मीडिया में उछलने के बाद उन्होंने जैसे-तैसे बैंकों का चार हजार करोड़ रुपए लौटाने की पेशकश थी। सरकारी बैंकों में जनता का पैसा लगा है और इस गाढ़ी कमाई को यूं जाया नहीं किया जा सकता। हर बार की तरह इस बार भी जनमानस को न्यायपालिका से न्याय की उम्मीद है।

जिंदगी के पत्थर, कंकड़ और रेत

प्रेरक प्रसंग

फिलॉस्फी के एक प्रोफेसर ने कुछ चीजों के साथ क्लास में प्रवेश किया। जब क्लास शुरू हुई तो उन्होंने एक बड़ा सा खाली शीशे का जार लिया और उसमे पत्थर के बड़े-बड़े टुकड़े भरने लगे। फिर उन्होंने स्टूडेंट्स से पूछा कि क्या जार भर गया है और सभी ने कहा हां।

तब प्रोफेसर ने छोटे-छोटे कंकड़ों से भरा एक बाक्स लिया और उन्हें जार में भरने लगे। जार को थोड़ा हिलाने पर ये कंकड़ पत्थरों के बीच सेटल हो गए। एक बार फिर उन्होंने छात्रों से पूछा कि क्या जार भर गया है और सभी ने हां में उत्तर दिया।

तभी प्रोफेसर ने एक रेत से भरा बाक्स निकाला और उसमें भरी रेत को जार में डालने लगे। रेत ने बची-खुची जगह भी भर दी। एक बार फिर उन्होंने पूछा कि क्या जार भर गया है और सभी ने एक साथ उत्तर दिया हां।

फिर प्रोफेसर ने समझाना शुरू किया और कहा कि मैं चाहता हूं कि आप इस बात को समझें कि यह जार आपके जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। बड़े-बड़े

पत्थर आपके जीवन की जरूरी चीजें हैं-आपकी फैमिली, आपका पार्टनर, आपकी हैल्थ, आपके बच्चे- ऐसी चीजें कि अगर आपकी बाकी सारी चीजें खो भी जाएं और सिर्फ ये रहें तो भी आपकी जिंदगी पूर्ण रहेगी। उन्होंने आगे समझाते हुए कहा कि ये कंकड़ कुछ अन्य चीजें हैं जो मैटर करती हैं- जैसे कि आपकी नौकरी, आपका घर इत्यादि और ये रेत बाकी सभी छोटी-मोटी चीजों को दर्शाती है। उन्होंने कहा कि अगर आप जार को पहले रेत से भर देंगे तो कंकड़ों और पत्थरों के लिए कोई जगह नहीं बचेगी। यही आपकी लाइफ के साथ होता है। अगर आप अपनी सारा समय और उर्जा छोटी-छोटी चीजों में लगा देंगे तो आपके पास कभी उन चीजों के लिए समय नहीं होगा जो आपके लिए महत्वपूर्ण हैं। उन चीजों पर ध्यान दीजिए जो आपकी खुशी के लिए जरूरी हैं। बच्चों के साथ खेलिए, अपने पार्टनर के साथ डांस कीजिए। काम पर जाने के लिए, घर साफ करने के लिए, पार्टी देने के लिए, हमेशा वक्त होगा। मगर पहले पत्थरों पर ध्यान दीजिये-ऐसी चीजें जो सचमुच मैटर करती हैं। अपनी प्राथमिकताएं निर्धारित कीजिए। बाकी चीजें बस रेत हैं।

पृष्ठ 1 के शेष

हिमाचल हाईकोर्ट को...

जस्टिस विवेक ठाकुर बिलासपुर जिले से हैं। वे केंद्र सरकार की ओर से सीनियर पैनल काउंसिल बनाए गए हैं। जस्टिस अजय मोहन गोयल कुल्लू जिला से हैं। वह एचआरटीसी, एचपीपीसीएल व एचपी स्टेट को-ऑपरेटिव बैंक के स्टैंडिंग काउंसिल का कार्य देख रहे थे। जस्टिस सीधी बारोवालिया हाईकोर्ट में रजिस्ट्रार के पद पर कार्यरत थे। वे धर्मशाला व सोलन में जिला एवं सत्र न्यायाधीश के पद पर कार्यरत रहे हैं। ऊना जिला के जस्टिस संदीप शर्मा 2015 से हाईकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता के रूप में कार्य कर रहे थे। वे असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल के पद पर दस साल सेवाएं दे चुके हैं।

सेना में भर्ती...

उन्होंने कहा कि भर्ती के ऑनलाइन पंजीकरण करवाना अनिवार्य है। ऑनलाइन पंजीकरण 16 अप्रैल से 20 मई तक किया जाएगा। उन्होंने कहा कि ऑनलाइन प्रक्रिया www.joinindian-army.nic.in पर पूरी की जा सकती है। पंजीकृत उम्मीदवारों को भर्ती की सूचना भी ऑनलाईन ही प्रदान की जाएगी। उन्होंने कहा कि कोई भी उम्मीदवार ऑनलाईन पंजीकरण के बिना भर्ती में भाग नहीं ले पाएगा।

दो साल में ...

इसके लिए 25 करोड़ रुपये के बजट का प्रावधान किया गया है। सामाजिक सुरक्षा पैंशन को 450 रुपये प्रतिमाह से 650 रुपये प्रतिमाह किया है। गत तीन वर्षों के दौरान 57000 नए पैंशन के मामले स्वीकृत किए हैं। 80 वर्ष से अधिक आयु के लोगों व 45 वर्ष से कम आयु की संतान वाली युवा विधवाओं की पैंशन को बढ़ाकर 1200 रुपये प्रतिमाह किया गया है।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के अंतर्गत दी जानी वाली राशि को 21 हजार से बढ़ाकर 40 हजार रुपये किया गया है और एचआरटीसी बसों में महिलाओं को किराए पर 25 प्रतिशत की छूट प्रदान की जा रही है। खाद्य सुरक्षा उपलब्ध करवाने के लिए राजीव गांधी अन्न योजना आरंभ की गई है। इसके अंतर्गत 37 लाख पात्र लाभार्थियों को लाभान्वित किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त सभी बीपीएल परिवारों को 35 किलोग्राम राशन प्रदान की जा रहा है। वीरभद्र सिंह ने कहा कि पेयजल आपूर्ति योजनाओं पर 763 करोड़ रुपये व्यय किए गए हैं। ग्रामीण जल आपूर्ति योजना के अंतर्गत 6949 अतिरिक्त बस्तियों को पेयजल आपूर्ति के अंतर्गत लाया गया है। पेयजल कमी वाले स्थानों पर 4690 हैंडपंप स्थापित किए गए हैं। उन्होंने कहा कि बिलासपुर में स्थापित होने वाले एम्स से प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाएं सुदृढ़ होंगी और प्रदेश सरकार ने मंडी जिला के नेरचौक में ईएसआईसी अस्पताल एवं मेडिकल कालेज को अपने अधीन लेने की प्रक्रिया आरंभ कर दी गई है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिहाड़ीदारों की मजदूरी को 150 रुपये से 200 रुपये बढ़ाया गया है। इसके अतिरिक्त 7 साल का सेवाकाल पूरा कर चुके दिहाड़ीदारों तथा 5 साल का सेवाकाल पूरा कर चुके अनुबंध कर्मियों को नियमित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जिन अशंकालिक कर्मियों ने 31 मार्च, 2016 तक 8 साल का सेवाकाल पूरा कर लिया है, को दिहाड़ीदार बनाने की प्रक्रिया आरम्भ कर दी गई है।

32 आयुर्वेद...

कर्ण सिंह ने कहा कि हालांकि प्रदेश में आयुर्वेद का अधिक प्रचलन है, परन्तु अब प्रदेश के लोगों में होम्योपैथिक की ओर भी रुझान बढ़ रहा है। इसी के मध्यनजर सभी वरिष्ठ नागरिकों के लिए जिला मुख्यालय में में वैलनेस सेंटर चलाए जाएंगे जहां पर मधुमेह, उच्च रक्तचाप, जोड़ों की बीमारियों और प्रोस्टेट संबंधी रोगों से लेकर ओपीडी सुविधा उपलब्ध करवाई जाएगी। उन्होंने कहा कि निकट भविष्य में सार्वजनिक उपक्रमों जैसे पथ परिवहन निगम, एचपीसीएल और एचपीटीडीसी आदि के परिसरों में होम्योपैथिक चिकित्सा, जांच शिविर लगाने के लिए प्रेरित किया जाएगा। कर्ण सिंह ने कार्यक्रम के उपरांत केंद्रीय आयुष मंत्री श्रीपद यसो नायक से भी भेंट की और उनसे केंद्र में लंबित प्रदेश की विभिन्न परियोजनाओं पर चर्चा की। उन्होंने केंद्रीय मंत्री को प्रदेश आने का न्यौता भी दिया।

सब बातों को त्याग दो, यहां तक कि मुक्ति का विचार भी त्याग दो और दूसरों की सहायता करो।

-स्वामी विवेकानंद

जानें क्या है यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची

वर्ष १९८३ में ताजमहल को यूनेस्को ने विश्व धरोहर सूची में शामिल किया था और यह भारत की ऐसी धरोहर है जहां हर वर्ष सबसे ज्यादा गोरेलू और विदेशी पर्यटक आते हैं।

इस समय दुनियाभर के करीब २८७ शहर यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज सिटी सूची में दर्ज हैं, लेकिन इनमें भारत से एक भी शहर नहीं है। भारतीय उपमहद्वीप से केवल नेपाल का भक्तापुर और श्रीलंका का गाले ही विश्व विरासत शहर घोषित हुआ है। भारत में अहमदाबाद, दिल्ली और मुंबई के बीच शुरुआती टक्कर के बाद सरकार ने तय किया है कि वह अहमदाबाद को हेरिटेज सिटी के रूप में दर्ज करवाने के लिए दावा पेश करेगी, लेकिन यह तो जून २०१७ में ही पता चलेगा कि भारत से कोई शहर पहली हेरिटेज सिटी बन पाता है या नहीं। फिलहाल तो सच्चाई यह है कि भारत से कोई भी शहर वर्ल्ड हेरिटेज सिटी सूची में नहीं है।

सभ्यता का आईना हैं धरोहर

प्राचीन धरोहरों का महत्व सिर्फ इस दृष्टि से नहीं है कि उनमें इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना के सूत्र छिपे हैं बल्कि ये इस लिहाज से भी महत्वपूर्ण हैं कि नई पीढ़ी उनसे बहुत कुछ सीख सकती है।

मोहनजोदड़ो की नगर योजना क्या आधुनिक नगर योजना के लिए जरूरी सबक मुहैया नहीं कराती है। क्या आगरा का ताजमहल आज भी देखने वालों को यह सोचने पर मजबूर नहीं करता है कि यह सुंदर इमारत कैसे साकार हुई होगी। इन्हें देखते हुए हम इस बात से रूबरू होते हैं कि किस तरह मनुष्य ने कदम दर कदम तरक्की का सफर तय किया है।

इन धरोहरों को देखते हुए नजर उन तमाम पायदानों पर पड़ती है, जिनसे होकर दुनिया आज यहां तक पहुंची है।

हेरिटेज सिटी होने का फायदा

यूनेस्को अगर किसी शहर को वर्ल्ड हेरिटेज सिटी घोषित करता है तो उसका नाम एकदम से दुनिया में चमक जाता है और वहां पर्यटकों की संख्या भी बहुत तेजी से बढ़ जाती है। गुजरात की राजधानी अहमदाबाद 11 वीं शताब्दी में बसा शहर है और यहां करीब 36 ऐसी जगह हैं जो आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया की सूची में हैं। बताया जाता है कि दिल्ली और मुंबई को वर्ल्ड हेरिटेज सिटी घोषित करने का प्रस्ताव इसलिए नहीं भेजा गया क्योंकि दिल्ली का प्रस्ताव शहरी विकास मंत्रालय के पास अटका है, जबकि मुंबई का प्रस्ताव बहुत ज्यादा अच्छा नहीं था।

इसके पहले बनारस को विश्व धरोहर शहर बनाने के लिए कई प्रयास हुए लेकिन बात नहीं बनी। वर्ष 1992 में सबसे पहले यूनेस्को के सामने बनारस शहर की खूबियों का बखान किया गया था, लेकिन यह ध्यान खींचने में कामयाब नहीं रहा। वर्ष 2002 में भी ऐसा ही एक प्रयास हुआ लेकिन वह भी असफल रहा। वर्ष 2012 में वर्ल्ड बैंक और केंद्र सरकार के शहरी विकास मंत्रालय ने अजमेर-पुष्कर, वाराणसी और हैदराबाद को ध्यान में रखकर योजना बनाई।

दिल्ली को लेकर भी ऐसे ही प्रयास हुए लेकिन सच्चाई यह है कि भारत से कोई भी शहर विश्व विरासत शहर की सूची में जगह नहीं बना पाया। लिहाजा सरकार अभी भी इसके लिए प्रयासरत है।

मांडू और सारनाथ संभावित सूची में

भारत से कई ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व की जगहें संभावित धरोहर सूची में शामिल हैं। इनमें मध्यप्रदेश के धार जिले में स्थित मांडू है तो पंजाब के अमृतसर स्थित पवित्र स्थल हरमंदिर साहिब भी है। खुदाई में मिले नालंदा के अवशेष भी इसी सूची में हैं। सिल्क रूट, शांति निकेतन, कश्मीर का मुगल गार्डन, अंडमान की सेलुलर जेल जैसी जगहें भी विश्व धरोहर होने की दौड़ में बनी हुई हैं। एक बार संभावित सूची में शामिल होने के बाद ही कोई भी धरोहर मुख्य सूची में जगह बनाने की योग्यता हासिल करती है।

दस साल में चुनी गई दो जगह

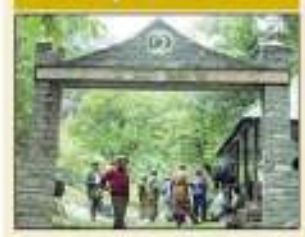

यूनेस्को किसी शहर को हेरिटेज सिटी इस आधार पर चुनता है कि वहां महत्वपूर्ण धरोहरों के साथ किस तरह का बर्ताव किया जाता है और उनके संरक्षण में कितनी गंभीरता दिखाई जाती है। इसी के साथ यह भी देखा जाता है कि आधुनिक होते हुए इस शहर ने अपनी विरासत को किस तरह सहेजा। विरासत के प्राचीन होने का प्रमाण महत्वपूर्ण है पर उस शहर की संस्थाओं का विरासत के प्रति लगाव ज्यादा मायने रखता है। यह जरूर राहत की बात है कि भारत से विश्व धरोहर सूची में शामिल होने वाले स्थलों की संख्या अच्छी है। वर्ष 2014 में गुजरात के पाटन स्थित रानी की वाव और कूच के ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क को यूनेस्को ने विश्व धरोहर सूची में शामिल किया।

करीब 10 वर्षों के अंतराल के बाद भारत से दो स्थलों का चयन एक साथ विश्व धरोहर सूची में हुआ। एक सांस्कृतिक धरोहर और एक प्राकृतिक धरोहर। प्राकृतिक धरोहरों की सूची में भारत से बहुत ही कम जगहें शामिल हो पाई हैं। सरकार कच्छ के रन और सिक्किम के कंचनजंघा नेशनल पार्क को भी इस सूची में शामिल करवाने के लिए प्रयासरत है। वर्ष 1972 में हुए वर्ल्ड हेरिटेज कन्वेंशन के 44 वर्ष बाद अब 161 देश अपनी और अन्य देशों की विरासत को बचाने के लिए साथ खड़े हैं।

किस देश से कितनी धरोहर

इटली	49	भारत	30
चीन	45	यूके	28
स्पेन	44	रशिया	25
जर्मनी	39	अमेरिका	21
फ्रांस	38	ऑस्ट्रेलिया	19
मेक्सिको	32	ब्राजील	19

धरोहर घोषित होने के फायदे

आखिर किसी इमारत या प्राकृतिक स्थान के विश्व धरोहर सूची में शामिल होने का फायदा क्या है, यह सवाल सभी के मन में उठता है। इसका जवाब यही है कि इस समय दुनियाभर की 1 हजार के करीब ही जगहें विश्व धरोहर सूची में शामिल हैं। किसी भी देश की खास जगह का नाम इस सूची में आने का मतलब है कि वह जगह पूरी दुनिया की नजर में आ जाती है। पर्यटकों में उसे देखने की उत्सुकता बढ़ जाती है। पर्यटकों के बीच यह संदेश जाता है कि इस जगह को देखना वाकई एक अद्भुत अनुभव होगा।

हालांकि इस सूची में शामिल होने का मतलब बहुत सारी जिम्मेदारियों को निभाना भी है जिनमें उस धरोहर का बचाव और उसकी देखरेख करना अहम है। चूंकि दुनिया के कई ऐसे देश हैं जो गरीब हैं और अपने तईं अपनी धरोहरों की रक्षा नहीं कर सकते हैं तो उनके लिए यूनेस्को काम करता है। लेकिन विश्व की धरोहर घोषित होने के कुछ नुकसान भी हैं। कंबोडिया के अंकोरवाट मंदिर, गेलोपेगोस आईलैंड और पेरू की माचू पीचू जैसे जगह को विश्व धरोहर घोषित करते ही यहां पर्यटकों की संख्या बहुत ज्यादा बढ़ गई और प्राचीन स्थलों की देखरेख में बाधा पहुंचने लगी। लेकिन फायदे ज्यादा हैं नुकसान कम।

भारत से बाहर धरोहर ये खास मंदिर

■ **अंकोरवाट, कंबोडिया**
यह दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक स्थल है जो भगवान विष्णु को समर्पित है। इसे सूर्यवर्मन द्वितीय ने बनाया था। यह विश्व विरासत सूची में है।

■ **पशुपतिनाथ मंदिर, नेपाल**
यह मंदिर भगवान शिव के रूप पशुपतिनाथ को समर्पित है और काठमांडू घाटी में बागमती नदी के नजदीक है। यह भी विश्व की खास धरोहर है।

■ **प्रामबनन, इंडोनेशिया**
9 वीं शताब्दी में बना प्रामबनन इंडोनेशिया का हिंदू मंदिर है। यह इंडोनेशिया का सबसे बड़ा हिंदू मंदिर है और दक्षिण पूर्व एशिया का सबसे बड़ा मंदिर है।

इन्हें चुना जाता है विश्व धरोहर....

■ ऐसी इमारत या स्थल जो मानव की कला या उसकी बुद्धिमत्ता के उत्कर्ष को दर्शाते हों।

■ एक तयशुदा समयसीमा में या एक सांस्कृतिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण मानवीय मूल्यों का आदान-प्रदान दर्शाने वाली कोई धरोहर। स्थापत्य के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छूना दर्शाने वाली तकनीक, इमारत, नगर योजना या फिर लैंडस्केप डिजाइन।

■ किसी जीवित या लुप्त हो चुकी सांस्कृतिक विरासत या सभ्यता को अभिव्यक्त करने वाली धरोहर।

■ ऐसी अद्भुत स्थापत्य इमारत या तकनालॉजी का उत्कृष्ट प्रदर्शन जो मानवीय इतिहास में बेहद ही महत्वपूर्ण हो।

■ मनुष्य ने किस तरह धरती पर बसना सीखा, भूभाग का इस्तेमाल या समुद्र का उपयोग करना सीखा उसे बताने वाली कोई कृति जो कि बदले हुए वातावरण में खतरे की जद में हो।

■ ऐसा विचार, विश्वास या कलात्मक अभिव्यक्ति जिसका पूरी दुनिया के लिए ही खास महत्व है।

■ ऐसी मिसाल जो धरती पर मनुष्य के जीवन के विकास क्रम को बताती हो। वह जो धरती में आए बदलावों को अभिव्यक्त करती हो और धरती पर हुए बदलाव को सामने रखती हो।

■ ऐसी इमारत या भू भाग जो प्राकृतिक रूप से अद्भुत सुंदरता को अपने में समेटे हो और जिसका सौंदर्य बेमिसाल हो।

■ ऐसी मिसाल जो इकोलॉजी या बायोलॉजी के विकास क्रम में महत्वपूर्ण कड़ी हो। जो इस जीवन के बदलावों को हमारे सामने रखती हो।

■ पृथ्वी पर व्याप्त जैव विविधता को बनाए रखने की दृष्टि से जीवों का ऐसा घर हो जो अन्यत्र कहीं नहीं है। जिसका पूरी दुनिया के लिए खास महत्व है।

विश्व धरोहर समिति निम्न तीन श्रेणियों में आने वाली संपत्तियों को धरोहर सूची में शामिल करती है

■ प्राकृतिक धरोहर स्थल – ऐसी धरोहर जो भौतिक और भौगोलिक दृष्टि से अत्यंत सुंदर या वैज्ञानिक महत्व की हो और जो किसी विलुप्ति के कगार पर खड़े जीव या वनस्पति का प्राकृतिक आवास हो सकती है।

■ सांस्कृतिक धरोहर स्थल- इस श्रेणी की धरोहर में स्मारक, स्थापत्य की इमारतें, मूर्तिकारी, चित्रकारी, स्थापत्य की झलक वाले शिलालेख, गुफा आवास और वैश्विक महत्व वाले स्थान, इमारतों का समूह, अकेली इमारतें या आपस में संबद्ध इमारतों का समूह, स्थापत्य में किया मानव का काम या प्रकृति और मानव के संयुक्त प्रयास का प्रतिफल, जो कि ऐतिहासिक, सौंदर्य, जातीय, मानवविज्ञान या वैश्विक दृष्टि से महत्व की हो, शामिल की जाती हैं।

■ मिश्रित धरोहर स्थल – इस श्रेणी के अंतर्गत वे धरोहर स्थल आते हैं जो कि प्राकृतिक और सांस्कृतिक दोनों ही रूपों में महत्वपूर्ण हों।

अच्छा मैनेजर बनने को अपनाएं 4 टिप्स

किसी भी संस्थान में एक मैनेजर की अहम भूमिका होती है। अगर आप भी अपने करियर में आगे बढ़ते हुए इस पद पर पहुंच गए हैं या पहुंचना चाहते हैं तो आपको अपने कार्यक्षेत्र के अलावा और भी चीजों पर ध्यान देना होगा। आपको अपनी सॉफ्ट स्किल्स की असली परीक्षा यहीं देनी होती है। एक लीडर के रूप में आप तभी सफल हो सकते हैं जब आपके कर्मचारी आपके साथ खुश, प्रेरित और उत्साहित महसूस करें। आइए जानते हैं ऐसे 4 टिप्स जिन्हें हर मैनेजर को अपनाना जरूरी हैं:

कर्मचारियों को प्रेरित करना

अगर आप अपनी टीम का सम्मान करेंगे तो वे आपका सम्मान करेंगे। आपको उनकी हर छोटी-बड़ी चीजों का एप्रिशियेट करना होगा। उनसे अपने काम की ही फीडबैक न लेते रहें, बल्कि उनकी व्यक्तिगत समस्याओं को शेयर करने के लिए भी प्रोत्साहित करें।

फील गुड कराएं

कर्मचारियों से केवल काम लेना है, ऐसी सोच आपके अच्छे मैनेजर बनने का गुण नहीं है। एक सफल मैनेजर में अपने कर्मचारियों की अच्छी बातों

और क्षमताओं को पहचाने की समझ होती है। उनका मनोबल बढ़ाने के साथ उन्हें ऐसा माहौल दें कि वे बेहिचक काम कर सकें।

पीठ पीछे भी प्रशंसा

आपको उनके काम, व्यवहार, उदारता की तारीफ उनके सामने तो करनी ही चाहिए। साथ ही आपको उनके पीठ पीछे भी तारीफ करना चाहिए। एक कर्मचारी जो जानता है कि उसकी कितनी प्रशंसा की जाती है तो वह ज्यादा मेहनत करेगा, अपने काम में ज्यादा आनंद लेगा और इस मानसिक खुशी को वह दूसरे कर्मचारियों के साथ बांटेगा।

जिम्मेदारी सौंपे

आप एक मैनेजर है क्योंकि आप अपने काम में एक्सपर्ट है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आपको सारा काम खुद करना है। आपको यह समझ होनी चाहिए कि कौन सा काम,कौन सा कर्मचारी बखूबी पूरा कर सकता है। आपको अपने कर्मचारी को सीखने और नए अवसर देने की कोशिश करनी चाहिए। धीरे-धीरे जैसे आप उनकी सक्षमता और कमजोरियों को समझने लगें उन्हें ज्यादा जिम्मेदारी के काम सौंपें।

सालभर में ही सोहा-कुणाल के रिश्ते में तनाव

शादी के लगभग सालभर बाद ही सोहा अली खान और कुणाल खेमू के रिश्ते में खटास आने लगी है। एक वेबसाइट स्पॉट बॉय के मुताबिक सोहा और कुणाल के बीच बच्चे को लेकर तनाव है। दोनों के रिश्ते पर लोगों का ध्यान तब गया जब 14 फरवरी के बाद से सोहा अली खान ने कुणाल को लेकर कोई ट्वीट नहीं किया। अक्सर कुणाल को लेकर ट्विटर पर बात करने वाली सोहा अली खान लगभग दो महीने से अपने पति को लेकर चुप हैं। यही चुप्पी सबको खल रही है। उन्होंने कुणाल को किए आखिरी ट्वीट में उन्हें वैलेंटाइन्स डे विश किया था।

वेबसाइट के मुताबिक तनाव का कारण है बच्चे की ख्वाहिश। कुणाल की इच्छा है जल्द ही सोहा मां बने। वहीं सोहा चाहती हैं कि वे मां-बाप बनने से पहले कुछ वक्त और लें, कुछ और फिल्में करें। सोहा समझाने की कोशिश कर रही हैं लेकिन कुणाल मानने को तैयार नहीं हैं। इस वजह से दोनों के बीच जमकर झगड़ा हो गया है।

कहा जा रहा है कि कुणाल का परिवार भी चाहता है कि जल्द से जल्द बच्चा हो। दोनों ने पिछले साल २५ जनवरी को ही शादी की थी। शादी से पहले कपल दो साल से लिव-इन रिलेशनशिप में था।

अब स्मार्ट बनेगा कपड़ा, नई तकनीक विकसित

कपड़े सिर्फ शरीर ढंकने की चीज नहीं रहे। वैज्ञानिकों ने कपड़े पर खास डिजिटल कढ़ाई टांकने की तकनीक विकसित की है। इस कढ़ाई की मदद से कपड़े को डिजिटल संदेशों के आदान-प्रदान के योग्य बनाया जा सकेगा। ऐसा कपड़ा स्मार्टफोन और अन्य स्मार्ट गैजेट के साथ मिलकर आपकी सेहत की निगरानी करने में भी सक्षम होगा।

- कपड़ों में सेंसर और मेमोरी डिवाइस लगाना बहुत से स्मार्ट गैजेट के लिए मददगार होगा। ऐसी शर्ट आपके स्मार्टफोन और टैबलेट के लिए एंटीना का काम कर सकती है। इनके जरिये संदेशों को डिजिटल तरीके से एकत्र करना और उन्हें आगे भेजना संभव होगा।
- ऐसे फैब्रिक का इस्तेमाल खास तरह के स्मार्ट बैंडेज बनाने में भी किया जा सकता है। इससे चिकित्सकों को यह पता लगता रहेगा कि पट्टी के नीचे क्षतिग्रस्त ऊतक की सेहत किस गति से सुधर रही है।
- ओहायो स्टेट यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता जॉन वोलाकिस के अनुसार संवाद और सेंसर की दुनिया में ऐसे ई-टेक्सटाइल तकनीक को नया आयाम दे सकते हैं। भविष्य में चिकित्सा के क्षेत्र में भी इनका बड़ा योगदान देखने को मिलेगा।
- इस कढ़ाई को खास तरह की सिलाई मशीन से कपड़े पर बनाया जाता है। विशेष कंप्यूटर प्रोग्राम के जरिये डिजिटल रेशों को कपड़े के फैब्रिक में टांक दिया जाता है।

विदेश से सबसे ज्यादा पैसा भारतीयों ने भेजा

वाशिंगटन। विदेश से अपने मुल्क में पैसा भेजने के मामले में भारतीय दुनिया में सबसे आगे हैं। इस तरह से प्राप्त होने वाली राशि को रेमिटेंस कहते हैं। वर्ष 2015 में भारत को रेमिटेंस के रूप से सर्वाधिक राशि मिली। यह और बात है कि पिछले साल की तुलना में इसमें एक अरब डॉलर की कमी आई है। वर्ष 2009 के बाद यह पहली गिरावट है। विश्व बैंक की रिपोर्ट में यह बात कही गई।

आव्रजन और विकास पर विश्व बैंक की वार्षिक रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत को रेमिटेंस के रूप में 2015 में करीब 69 अरब डॉलर की राशि मिली, जो किसी भी अन्य देश के मुकाबले में सबसे ज्यादा है। भारत को 2014 में रेमिटेंस के तौर पर 70 अरब डॉलर मिले थे। रेमिटेंस में बड़ी राशि प्राप्त करने वाले देशों में 64 अरब डॉलर के साथ चीन, फिलीपींस (28 अरब डॉलर), मेक्सिको (25 अरब डॉलर) और नाइजीरिया (29 अरब डॉलर) शामिल हैं।

आई है राशि में कमी

रिपोर्ट के मुताबिक, दक्षिण एशियाई क्षेत्र की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भारत को 2015 में मिली रेमिटेंस की राशि में 2.9 फीसदी की कमी आई है। 2009 के बाद यह पहली बार है जब इसमें गिरावट आई है। विकासशील देशों को आधिकारिक रूप से विदेश से मिली रेमिटेंस की राशि 2015 में 431.6 अरब डॉलर रही। यह 2014 के 430 अरब डॉलर की तुलना में 0.4 फीसदी ज्यादा है। ग्लोबल आर्थिक संकट के बाद इसमें यह सबसे कम वार्षिक वृद्धि है। इसमें धनी देशों को भी शामिल कर लें तो 2015 में ग्लोबल रेमिटेंस का यह आंकड़ा 581.6 अरब डॉलर रहा। 2015 के 592 अरब डॉलर के मुकाबले में यह 1.7 फीसदी कम है।

क्यों महत्वपूर्ण है रेमिटेंस

विश्व बैंक के ग्लोबल इंडिकेटर्स ग्रुप के डायरेक्टर ऑगस्तो लोपेज-क्लारोस ने कहा कि रेमिटेंस लाखों परिवारों की आय का स्थायी स्रोत है। विकासशील देशों की विनिमय दरों के लिए भी यह महत्वपूर्ण है। इसकी रफ्तार सुस्त हुई तो दुनिया के तमाम गरीब परिवारों की मुश्किल हो सकती है।

इनमें भी घटी रेमिटेंस की रफ्तार

देश	2015	2014
बांग्लादेश	2.5	8.0
पाकिस्तान	12.8	16.7
श्रीलंका	0.5	9.6

(सभी आंकड़े फीसदी में हैं)

इसलिए आई है गिरावट

रिपोर्ट कहती है कि खाड़ी देशों से अपनों को भेजे जाने वाली रकम पर कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट का असर साफ दिखता है। इसके अलावा जिन प्रमुख देशों से पैसे भेजे जाते हैं, उनकी मुद्राओं (मसलन यूरो, कनाडाई डॉलर, ऑस्ट्रेलियाई डॉलर) की विनिमय दर में अमेरिकी डॉलर की तुलना में गिरावट की भी भूमिका हो सकती है। भूकंप के कारण नेपाल को मिली रेमिटेंस की राशि में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई है। यह वर्ष 2015 में 20.9 फीसद रही जबकि 2014 में यह 3.2 फीसद रही थी।

संपादक पीसी रैना व प्रकाशक संदीप परमार द्वारा वीसीओ सिद्धबाड़ी, तहसील धर्मशाला, जिला कांगड़ा-176057, जिस से प्रकाशित व संपादित और इन्फीनिटी प्रिंटिंग प्रेस, गुरुद्वारा रोड धर्मशाला से मुद्रित। फोन नंबर : 01892-235315 Mail : badaltirahain@gmail.com